नहीं हुआ। आखिर में श्रीमती सुशीला के पति श्री रामकुमार ने जमीन दी, तब जाकर शौचालय बना।

जैविक-शौचालय की संरक्षक

50 वर्षीय श्रीमती सुशीला को सर्वसम्मति से जैविक-शौचालय प्रबंध समिति का संरक्षक चुना गया। वह बताती हैं कि उन्हें कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

लेकिन इन महिलाओं ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने मिलकर गांव के आंतरिक प्रतिरोध से लड़कर शौचालय बनवा कर ही दम लिया। उनके इस प्रयास में गैर-सरकारी संस्था 'वात्सल्य' ने आरम्भ से अंत तक अहम भूमिका निभाई।

इस पूरे संघर्ष में तीन महीने लगे। सुशीला बताती हैं कि इस नए, पक्के, शौचालय का इस्तेमाल 18 परिवार ही कर रहे हैं। किसी परिवार में नौ सदस्य हैं तो किसी में सात।

सुशीला के अलावा नन्ही शौचालय के प्रबंध समिति सचिव का काम देखती हैं जबकि श्री सियाराम कोषाध्यक्ष हैं। नन्हीं के मुताबिक तीन और परिवार इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं।

15 रुपये प्रति महीना

इसमें चार शौचालय हैं और एक स्नानघर इसके बगल में ही मर्दों के लिए इसी तरह की व्यवस्था है।

प्रत्येक परिवार, जो इस शौचालय का इस्तेमाल कर रहा है, उसे इसके रख-रखाव के लिए 15 रुपये प्रति माह देना होगा। इस राशि में से ही बिजली का बिल भी अदा किया जाएगा।

इसकी सफ़ाई की ज़िम्मेदारी प्रबंध समिति की महिलाओं ने अपने ऊपर ले ली है।

वात्सल्य के अंजनी कुमार सिंह बताते हैं कि इस जैविक-शौचालय की विशेषता देश के रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) द्वारा तैयार की गई इसकी आधुनिक तकनीक है, जिसे बायो-डीजेस्टर कहते हैं।

45 फुट लम्बे और 18 फुट चौड़े इस शौचालय का मल-मूत्र जीवाणुओं द्वारा साफ़ पानी में बदल दिया जाता है जिसे क्यारियों की सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

गांव की महिलाएं अभी इस पानी के इस्तेमाल के लिए पूरी तरह सहमत नहीं हैं।

बायो-डीजेस्टर टैंक के निर्माण में 1.80 लाख रुपए खर्च हुए जबकि इसकी कुल लागत 6.25 लाख रुपए आई। यह सारा खर्च ग़ैर-सरकारी संस्था 'प्लान इंडिया' ने वहन किया।

संपर्क करें:
डॉ. रमा मेहता
राजसं, रुड़की

बरसात

गरम हुए सूरज दादा तो
बढ़ने लगा धरा का ताप,
सागर का पानी भी उबला
उड़ा गगन में बनकर भाप।

भाप कणों ने मिल आपस में
बना लिया बादल का रूप,
उड़ता रहता यहाँ वहाँ वह
रंग बदलते सहते धूप।

हवा उड़ा फिर इक दिन उसको
ऊँचे नभ के पहुँची पास,
ठण्ड बहुत थी अरे वहाँ तो
काँप गई बादल की साँस।

बादल के अन्दर से फिर तो
बरसी बूँदें कई हजार,
धरती पर फैली हरियाली
वर्षा जीवन का आधार।

नदी

नदियाँ कल-कल बहती जाती
धरती का आँचल हरियाती,
आता जो भी प्यासा तट पर
उन सब की ये प्यास बुझाती।

कितना निर्मल इनका पानी
इन पर बहती हवा सुहानी,
बगुले पाँत बनाकर बैठे
तैर रही है मछली रानी।

लोग नहाते कपड़े धोते
भर-भर घर ले जाते मटकी,
नदियों से यदि मिले न जल तो
समझो जग की साँसें अटकी।

नदियों से जीवों का जीवन
इनसे ही हैं जंगल उपवन,
नदियों को हम करें न दूषित
रखें बनाए इनको पावन।

बरसा पानी

बरसा पानी भरी तलाई
धरती पर हरियाली छाई,
सौंधी-सौंधी गंध उठी है
गर्मी की हो गई विदाई,

दौड़-दौड़ बच्चे आए
देख-देख पानी हर्षाए
कूद पड़े हैं कुछ तो इसमें
खड़े किनारे कुछ मुस्काए,

कोई फेंक रहा है कंकर,
नाचे कोई किलकारी भर
खोद-खोद कर गीली मिट्टी
बना रहा है कोई तो घर,

हवा चल रही कितनी बढ़िया
फुदक रही पेड़ों पर चिड़िया,
पानी को छूने की जिद कर
मचल रही गोदी में गुड़िया,

वर्षा है ऋतुओं की रानी
सारे जग को देती पानी,
आगे बढ़ती है इससे ही
सब जीवों की राम कहानी।

संपर्क करें:
सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
3-फ-22, विज्ञान नगर, कोटा - 324005 (राज.)
मो.न. - 09928539446